International Journal of Literacy and Education

E-ISSN: 2789-1615
P-ISSN: 2789-1607
IJLE 2021; 1(1): 44-48
www.educationjournal.info
Received: 17-11-2020
Accepted: 23-12-2020

सीमा श्रीवास्तव
शोध छात्रा, शिक्षा विभाग,
स्वामी विवेकानन्द विश्वविद्यालय,
सागर, मध्यप्रदेश, भारत

Corresponding Author:
सीमा श्रीवास्तव
शोध छात्रा, शिक्षा विभाग,
स्वामी विवेकानन्द विश्वविद्यालय,
सागर, मध्यप्रदेश, भारत

शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव एवं कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

सीमा श्रीवास्तव

सारांश
वर्तमान समय में कोविड–19 जैसी महामारी के चलते पूरी दुनिया को घुटने पे ला दिया है। इस दौरान भारत में भी बेरोजगारी की दर में कई गुना वृद्धि हुई। एक रिसर्च रिपोर्ट के हिसाब से कोरोना संकट के इस दौर में करीब 86 फीसदी लोगों को अपनी नौकरी जाने का डर सताता रहा। ब्रिटिश रिसर्च फर्म क्रॉस्बी टेक्सटर ग्रुप के एक रिसर्च रिपोर्ट में यह बात सामने आई। कि कोविड–19 महामारी के कारण लोग अपनी नौकरी और आजीविका खोने के डर के साए में जिए। इस सर्वे में शामिल सबसे ज्यादा 86 फीसदी भारतीय अपनी नौकरी जाने को लेकर चिंतित रहे। इसकी तुलना में ब्रिटेन में सिर्फ 31 फीसदी, ऑस्ट्रेलिया में सिर्फ 33 फीसदी, अमेरिका में 41 फीसदी और हांगकांग में 71 फीसदी लोग नौकरी जाने से चिंतित रहे। इससे देश के शिक्षक भी अछूते नहीं रहे। कोरोना का असर उनके व्यवहार एवं कार्य दोनों पर पड़ा। वहीं नौकरी जाने को लेकर उनमें मानसिक तनाव भी देखा गया। प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की कार्य–संतुष्टि एवं व्यावसायिक तनाव का तुलनात्मक अध्ययन करना था। जिसके लिए जनपद बलरामपुर, उ0प्र0 के माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी 100 शिक्षक एवं शिक्षिकाओं कायादृच्छिक विधि से चयन प्रतिदर्श के रूप में किया गया। परिकल्पना परीक्षण के लिए टी–परीक्षण के प्रयोग करते हुए पाया कि– माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं, सरकारी शिक्षक एवं शिक्षिकाओं, गैर–सरकारी शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि में अन्तर नहीं पाया गया। जबकि सरकारी शिक्षकों एवं गैर–सरकारी शिक्षकों, सरकारी शिक्षिकाओं एवं गैर–सरकारी शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया। परन्तु माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं, सरकारी शिक्षकों एवं गैर–सरकारी शिक्षकों, सरकारी शिक्षिकाओं एवं गैर–सरकारी शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव में अन्तर पाया गया। वहीं सरकारी शिक्षक एवं शिक्षिकाओं, गैर–सरकारी शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

मुख्य शब्द– कार्य संतुष्टि एवं व्यावसायिक तनाव

प्रस्तावना
शिक्षा मानव के सर्वांगीण विकास की जननी है जन्म लेने के बाद ही वह विशेष वातावरण तथा परिस्थितियों का सामना करने लगता है और विकास की ओर अग्रसर होता है। शुरू में उसकी वातावरण के समायोजन करने की शक्ति बड़ी ही क्षीण होती है, किन्तु धीरे–धीरे उसकी बौद्धिक, शारीरिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों में परिपक्वता आने लगती है और वह अपेक्षाकृत अच्छे ढंग से अपने को वातावरण के साथ समायोजन करने में सफल होता है। वह वातावरण के साथ क्रिया प्रतिक्रिया करता हुआ अनुभव ग्रहण करता है। इस अनुभव ग्रहण करने की प्रक्रिया में ही उसकी शिक्षा निहित होती है। शिक्षा ही मनुष्य की अन्तनिर्हित शक्तियों का विकास करती है। और उसके द्वारा ही मनुष्य पाश्विक वृत्तियों का नियंत्रण, शोधन तथा मार्गान्तरीकरण होता है और मनुष्य इस समाज का निर्माता और संरक्षक बनता है। जीवन में शिक्षा का वही महत्व है जो पेड़–पौधों के लिए कृषि का होता है। शिक्षा के द्वारा मनुष्य तथा समाज दोनों को शक्ति मिलती है। लॉक महोदय ने स्वयं लिखा है–
''पौधों का विकास कृषि द्वारा और मनुष्य का विकास शिक्षा द्वारा होता है।''

वैदिक युग में शिक्षा को प्रकाश का स्त्रोत माना गया है जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हमारा पथ प्रदर्शन करती है। ज्ञान से मनुष्य के अन्तर्चक्षु खुल जाते है। अतः ज्ञान को तीसरा नेत्र भी कहा गया है–
''ज्ञानं मनुजस्य तृतीय नेंत्रं''

शिक्षा प्रक्रिया के तीन प्रमुख अंग शिक्षक, शिक्षार्थी और पाठ्य–वस्तु हैं जिनमें शिक्षक का स्थान सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। श्रेष्ठ अध्यापकों के अभाव में सुयोग्य विद्यार्थी भी वांछित ज्ञान अर्जित करने में

सफल नहीं हो पाते हैं। अच्छी से अच्छी पाठ्य–वस्तु भी निपुण शिक्षकों के अभाव में प्राणहीन हो जाती है। अतः शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को सरल तथा बोधगम्य बनाने में शिक्षक की भूमिका अहम होती है। हमारा वर्तमान समाज व राष्ट्र परिवर्तन व विकास के एक नाजुक परन्तु अत्यन्त महत्वपूर्ण दौर से गुजर रहा है। ऐसी परिस्थिति में शिक्षक का उत्तरदायित्व और भी अधिक बढ़ जाता है। राष्ट्रीय विकास में शिक्षक का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। प्रसिद्ध विद्वान जे0 एफ0 ब्राउन ने अध्यापक की भूमिका को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि ''शिक्षक शिक्षण का महत्वपूर्ण अंग है। पाठ्यक्रम, विद्यालय संगठन और पठन सामग्री यद्यपि अध्यापन के महत्वपूर्ण अंग है, फिर भी वे सभी तब तक निश्प्राण और अनुपयोगी हैं जबतक शिक्षक अपने सजीव व्यक्तित्व द्वारा उसमें प्राण प्रतिष्ठा नहीं कर देता है।'' अतः शिक्षण की सफलता शिक्षकों की योग्यता पर निर्भर करती है। परंतु वर्तमान में शिक्षा के स्वरूप में अनेक परिवर्तन हुए हैं। आज समाज के अधिकांश व्यक्ति शिक्षण व्यवसाय को अपनाना नहीं चाहते हैं उनका मानना है कि शिक्षक को समाज के अनेकों कार्यों में संलिप्त रख जाता है। जिसके कारण उनमें कार्य संतुष्टि का अभाव पाया जाता है। वहीं दूसरी ओर गैर सरकारी शिक्षक हैं जो सरकारी शिक्षकों की अपेक्षा कम सैलरी पर कार्य करते हैं उसके उपरांत भी प्रबंधतंत्र कब उनको संस्था से निकाल देगा इस बात की चिंता उनको हमेशा सताती है। जिसके कारण उनमें व्यावसायिक तनाव अधिक देखने को मिलता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी समस्या से ग्रसित है, जिसमें तनाव एक प्रमुख मनोवैज्ञानिक समस्या है जो शिक्षकों को शारीरिक व मानसिक रूप से कमजोर कर देती है। जिससे उसका कृत्य संतोष कम हो जाता है। उसका दृष्टिकोण निराशावादी हो जाता है और वे चिन्ता और कुण्ठा से ग्रसित हो जाते है। जिसके कारण उनके कार्य सामर्थ्य और आत्म–विश्वास में कमी पायी जाती है। वर्तमान समय में कोविड–19 जैसी महामारी के चलते पूरी दुनिया को घुटने पे ला दिया है। इस दौरान भारत में भी बेरोजगारी की दर में कई गुना वृद्धिहुई। यानी पहले से ही आर्थिक मंदी के दौर से गुजर रहे भारत में मार्च 2021 में रोजगार दर अब तक सबसे निचले स्तर में पहुंच गई थी। एक रिसर्च रिपोर्ट के हिसाब से कोरोना संकट के इस दौर में करीब 86 फीसदी लोगों को अपनी नौकरी जाने का डर सता रहा। ब्रिटिश रिसर्च फर्म क्रॉस्बी टेक्सटर ग्रुप के एक रिसर्च रिपोर्ट में यह बात सामने आई। सर्वे के अनुसार, कोविड–19 महामारी के कारण लोग अपनी नौकरी और आजीविका खोने के डर के साए में जिए। इस सर्वे में शामिल सबसे ज्यादा 86 फीसदी भारतीय अपनी नौकरी जाने को लेकर चिंतित रहे। इसकी तुलना में ब्रिटेन में सिर्फ 31 फीसदी, ऑस्ट्रेलिया में सिर्फ 33 फीसदी, अमेरिका में 41 फीसदी और हांगकांग में 71 फीसदी लोग नौकरी जाने से चिंतित रहे। इससे देश के शिक्षक भी अछूते नहीं रहे। कोरोना का असर उनके व्यवहार एवं कार्य दोनों पर पड़ा। इस ज्वलंत समस्या को दृष्टिगत रखते हुए इस प्रकरण पर शोध करने का प्रयास किया।

समस्या कथन

शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव एवं कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये है।

1. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की कार्य–संतुष्टि एवं व्यावसायिक तनाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत सरकारी एवं गैर–सरकारी शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं व्यावसायिक तनाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत सरकारी एवं गैर–सरकारी शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि एवं व्यावसायिक तनाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत सरकारी शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की कार्य–संतुष्टि एवं व्यावसायिक तनाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत गैर सरकारी शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि एवं व्यावसायिक तनाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत अध्ययन के अन्तर्गत निम्नलिखित शोध परिकल्पनाएं निर्धारित की गयी है–

1. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की कार्य–संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत सरकारी शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की कार्य–संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं है।
3. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत गैर–सरकारी शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि में सार्थक अन्तर नही है।
4. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत सरकारी एवं गैर–सरकारी शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं है।
5. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत सरकारी एवं गैर–सरकारी शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं है।
6. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव में सार्थक अन्तर नहीं है।
7. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत सरकारी शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव में सार्थक अन्तर नहीं है।
8. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत गैर–सरकारी शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव में सार्थक अन्तर नहीं है।
9. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत सरकारी एवं गैर–सरकारी शिक्षकों के व्यावसायिक तनाव में सार्थक अन्तर नहीं है।
10. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत सरकारी एवं गैर–सरकारी शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव में सार्थक अन्तर नहीं है।

अनुसंधान की विधि

प्रस्तुत शोध में वणर्नात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

अध्ययन की जनसंख्या एवं न्यादर्श

प्रस्तुत शोध मे बलरामपुर जनपद के माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी शिक्षक एवं शिक्षिकाओं को अध्ययन की जनसंख्या के रूप में सम्मिलित किया गया तथा 100 शिक्षक एवं शिक्षिकाओं कोयादृच्छिक विधि से चयन करते करते हुए प्रतिदर्श के रूप में चुना गया।

अध्ययन में प्रयुक्त शोध उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में अनुसंधानकर्ता ने निम्नलिखित दो मापनी को उपकरणों के रुप में संम्मिलित किया है।

1. कार्य संतुष्टि मापनी (Job Satisfaction scale)– अध्यापकों की कार्य संतुष्टि मापन हेतु शोधकर्ता ने डॉ अमर सिंह एवं डॉ टी0 आर0 शर्मा द्वारा निर्मित Job Satisfaction scale का प्रयोग किया।
2. व्यावसायिक तनाव मापनी (Occupational Stress Index)– व्यावसायिक तनाव मापनी के लिए शोधकर्ता ने डॉ0 ए0 के0

श्रीवास्तव और डॉ0 ए0 पी0 सिंह की व्यावसायिक तनाव सूची का प्रयोग किया।

प्रयुक्त सांख्यकीय विधियॉ

प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित सांख्यकीयविधियों का प्रयोग किया गया।

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. टी–टेस्ट

परिकल्पनाओं का परीक्षण

प्रस्तुत लघु शोध में आंकड़ों का उद्देश्य के अनुसार विश्लेषण एवं विवेचन किया गया है। परिकल्पनाओं का परीक्षण निम्नवत है–

1. कार्य संतुष्टि से संबन्धित परिकल्पनाओं का परीक्षण–

तालिका 1– माध्यमिक स्तर के कार्यरत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के कार्य संतुष्टि का परीक्षण मान

परि0 क्रम0	समूह (Group)	संख्या N	मध्यमान M	मानक विचलन (S.D.)	मध्यमानों का अन्तर IMI	मानक त्रुटि (SED)	मुक्तांश (df)	t-मान	परिणम
H01	शिक्षक	50	64.40	9.67	1.94	2.23	98	0.86	स्वीकृत
	शिक्षिकाएं	50	66.34	12.48					
H02	सरकारी शिक्षक	25	67.66	8.43	3.30	2.41	48	1.36	स्वीकृत
	सरकारी शिक्षिकाएं	25	70.96	8.63					
H03	गैर–सरकारी शिक्षक	25	60.80	9.47	1.34	2.78	48	0.48	स्वीकृत
	गैर–सरकारी शिक्षिकाएं	25	62.14	10.20					
H04	सरकारी शिक्षक	25	67.66	8.43	6.86	2.53	48	2.71	अस्वीकृत
	गैर–सरकारी शिक्षक	25	60.80	9.47					
H05	सरकारी शिक्षिकाएं	25	70.96	8.63	8.82	2.67	48	3.30	अस्वीकृत
	गैर–सरकारी शिक्षिकाएं	25	62.14	10.20					

सार्थकता स्तर– .05

उपर्युक्त तालिका सं0– 1 की परिकल्पना सं0 Ho1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि के टी–परीक्षण का परिकलित मान 0.86 है जो सार्थकता स्तर 0.05 तथा मुक्तांश (df) 98 पर टी–परीक्षण के सारणी मान 1.98 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना (Ho1) स्वीकृत होती है अर्थात् माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। परन्तु शिक्षकएवं शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि के मध्यमानों के आधार पर शिक्षकों की अपेक्षा शिक्षिकाएं अधिक संतुष्ट पायी गयी।

परिकल्पना सं0 Ho2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत सरकारी शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि के टी–परीक्षण का परिकलित मान 1.36 है जो सार्थकता स्तर 0.05 तथा मुक्तांश (df) 48 पर टी–परीक्षण के सारणी मान 2.01 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना (Ho2) स्वीकृत होती है अर्थात् माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत सरकारी शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। परन्तु सरकारी शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि के मध्यमानों के आधार पर सरकारी शिक्षकों की अपेक्षा सरकारी शिक्षिकाएं अधिक संतुष्ट पायी गयी।

परिकल्पना सं0 Ho3 के अवलोकन से स्पष्ट है कि माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत गैर–सरकारी शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि के टी–परीक्षण का परिकलित मान 0.48 है जो सार्थकता स्तर 0.05 तथा मुक्तांश (df) 48 पर टी–परीक्षण के सारणी मान 2.01 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना (Ho3) स्वीकृत होती है। अर्थात् माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत गैर–सरकारी शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। परन्तु गैर–सरकारी शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि के मध्यमानों के आधार पर गैर–सरकारी शिक्षकों की अपेक्षा गैर–सरकारी शिक्षिकाएं अधिक संतुष्ट पायी गयी।

परिकल्पना सं0 Ho4 के अवलोकन से स्पष्ट है कि माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत सरकारी शिक्षकों एवं गैर–सरकारी शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के टी–परीक्षण का परिकलित मान 2.71 है जो सार्थकता स्तर 0.05 तथा मुक्तांश (df) 48 पर टी–परीक्षण के सारणी मान 2.01 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना (Ho4) अस्वीकृत होती है और शोध परिकल्पना (H4) स्वीकृत होती है। अर्थात् माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत सरकारी शिक्षकों एवं गैर–सरकारी शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में सार्थक अन्तर है।जहॉसरकारी शिक्षक एवं गैर–सरकारी शिक्षकोंकी कार्य संतुष्टि के मध्यमानों के आधार पर गैर–सरकारी शिक्षकों की तुलना मेंसरकारी शिक्षकअधिक संतुष्ट पाए गए।

परिकल्पना सं0 Ho5 के अवलोकन से स्पष्ट है कि माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत सरकारी शिक्षिकाएं एवं गैर–सरकारी शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि के टी–परीक्षण का परिकलित मान 3.30 है जो सार्थकता स्तर 0.05 तथा मुक्तांश (df) 48 पर टी–परीक्षण के सारणी मान 2.01 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना (Ho5) अस्वीकृत होती है और शोध परिकल्पना (H5) स्वीकृत होती है। अर्थात् माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत सरकारी शिक्षिकाओं एवं गैर–सरकारी शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि में सार्थक अन्तर है। जहॉ समूहों की कार्य संतुष्टि के मध्यमानों के आधार पर गैर–सरकारी शिक्षिकाओं की तुलना में सरकारी शिक्षिकाएं अधिक संतुष्ट पाई गई।

2. व्यावसायिक तनाव से संबन्धित परिकल्पनाओं का परीक्षण

तालिका 2– माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक–शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव का परीक्षण मान

परि0 क्रम0	समूह	संख्या N	मध्यमान M	मानक विचलन (S.D.)	मध्यमानों का अन्तर (IMI)	मानक त्रुटि (SED)	मुक्तांश (df)	t-मान	परिणाम
$H_0$6	शिक्षक	50	130.22	20.8	18.8	4.06	98	4.63	अस्वीकृत
	शिक्षिकाएं	50	149.02	19.8					
$H_0$7	सरकारी शिक्षक	25	127.88	16.17	7.46	4.96	48	1.50	स्वीकृत

	सरकारी शिक्षिकाएं	25	135.34	18.88					
$H_0$8	गैर–सरकारी शिक्षक	25	144.36	21.51	7.78	5.48	48	1.41	स्वीकृत
	गैर–सरकारी शिक्षिकाएं	25	152.14	17.04					
$H_0$9	सरकारी शिक्षक	25	127.88	16.17	16.48	5.38	48	3.06	अस्वीकृत
	गैर–सरकारी शिक्षक	25	144.36	21.51					
$H_0$10	सरकारी शिक्षिकाएं	25	135.34	18.88	16.80	5.08	48	3.31	अस्वीकृत
	गैर–सरकारी शिक्षिकाएं	25	152.14	17.04					

सार्थकता स्तर– .05

उपर्युक्त तालिका सं0– 2 की परिकल्पना सं0 Ho6 के अवलोकन से स्पष्ट है कि माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव के टी–परीक्षण का परिकलित मान 4.63 है जो सार्थकता स्तर 0.05 तथा मुक्तांश (df) 98 पर टी–परीक्षण के सारणी मान 1.98 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना (Ho6) अस्वीकृत होती है और शोध परिकल्पना स्वीकृत होती है। अर्थात् माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की के व्यावसायिक तनाव में सार्थक अन्तर है। परन्तु शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव के मध्यमानों के आधार पर शिक्षकों की अपेक्षा शिक्षिकाओं में अधिक के व्यावसायिक तनाव पाया गया।

परिकल्पना सं0 Ho7 के अवलोकन से स्पष्ट है कि माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत सरकारी शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव के टी–परीक्षण का परिकलित मान 1.50 है जो सार्थकता स्तर 0.05 तथा मुक्तांश (df) 48 पर टी–परीक्षण के सारणी मान 2.01 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना (Ho7) स्वीकृत होती है अर्थात् माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत सरकारी शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। परन्तु सरकारी शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव के मध्यमानों के आधार पर सरकारी शिक्षकों की अपेक्षा सरकारी शिक्षिकाओं में अधिक के व्यावसायिक तनाव पाया गया

परिकल्पना सं0 Ho8 के अवलोकन से स्पष्ट है कि माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत गैर–सरकारी शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव के टी–परीक्षण का परिकलित मान 1.41 है जो सार्थकता स्तर 0.05 तथा मुक्तांश (df) 48 पर टी–परीक्षण के सारणी मान 2.01 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना (Ho8) स्वीकृत होती है। अर्थात् माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत गैर–सरकारी शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। परन्तु गैर–सरकारी शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव के मध्यमानों के आधार पर गैर–सरकारी शिक्षकों की अपेक्षा गैर–सरकारी शिक्षिकाओं में अधिक के व्यावसायिक तनाव पाया गया।

परिकल्पना सं0 Ho9 के अवलोकन से स्पष्ट है कि माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत सरकारी शिक्षकों एवं गैर–सरकारी शिक्षको के व्यावसायिक तनाव के टी–परीक्षण का परिकलित मान 3.06 है जो सार्थकता स्तर 0.05 तथा मुक्तांश (df) 48 पर टी–परीक्षण के सारणी मान 2.01 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना (Ho9) अस्वीकृत होती है और शोध परिकल्पना (H9) स्वीकृत होती है। अर्थात् माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत सरकारी शिक्षकों एवं गैर–सरकारी शिक्षकों के व्यावसायिक तनाव में सार्थक अन्तर है। जहॉ सरकारी शिक्षक एवं गैर–सरकारी शिक्षकों के व्यावसायिक तनाव के मध्यमानों के आधार पर गैर–सरकारी शिक्षकों की तुलना में सरकारी शिक्षकों कम व्यावसायिक तनाव पाया गया।

परिकल्पना सं0 Ho10 के अवलोकन से स्पष्ट है कि माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत सरकारी शिक्षिकाएं एवं गैर–सरकारी शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव के टी–परीक्षण का परिकलित मान 3.31 है जो सार्थकता स्तर 0.05 तथा मुक्तांश (df) 48 पर टी–परीक्षण के सारणी मान 2.01 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना (Ho10) अस्वीकृत होती है और शोध परिकल्पना (H10) स्वीकृत होती है। अर्थात् माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत सरकारी शिक्षिकाओं एवं गैर–सरकारी शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव में सार्थक अन्तर है। जहॉ सरकारी शिक्षिकाओं एवं गैर–सरकारी शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव के मध्यमानों की तुलना के आधार पर गैर–सरकारी शिक्षिकाओं की अपेक्षा सरकारी शिक्षिकाओं में कम व्यावसायिकतनाव पाया गया।

अध्ययन के निष्कर्ष

अध्ययन के निम्नलिखित प्राप्त हुए–

1. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। जबकि शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि के मध्यमानों के आधार पर शिक्षकों की अपेक्षा शिक्षिकाएं अधिक संतुष्ट पायी गयी।
2. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत सरकारी शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। जबकि सरकारी शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि के मध्यमानों के आधार पर सरकारी शिक्षकों की अपेक्षा सरकारी शिक्षिकाएं अधिक संतुष्ट पायी गयी।
3. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत गैर–सरकारी शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। जबकि गैर–सरकारी शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि के मध्यमानों के आधार पर गैर–सरकारी शिक्षकों की अपेक्षा गैर–सरकारी शिक्षिकाएं अधिक संतुष्ट पायी गयी।
4. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत सरकारी शिक्षकों एवं गैर–सरकारी शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया। जबकि सरकारी शिक्षक एवं गैर–सरकारी शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के मध्यमानों के आधार पर गैर–सरकारी शिक्षकों की तुलना में सरकारी शिक्षक अधिक संतुष्ट पाए गए।
5. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत सरकारी शिक्षिकाओं एवं गैर–सरकारी शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया। जबकि समूहों की कार्य संतुष्टि के मध्यमानों के आधार पर गैर–सरकारी शिक्षिकाओं की तुलना में सरकारी शिक्षिकाएं अधिक संतुष्ट पाई गई।
6. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की के व्यावसायिक तनाव में सार्थक अन्तर पाया गया। जबकि शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव के मध्यमानों के आधार पर शिक्षकों की अपेक्षा शिक्षिकाओं में अधिक के व्यावसायिक तनाव पाया गया।
7. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत सरकारी शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। जबकि सरकारी शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव के मध्यमानों के आधार पर सरकारी शिक्षकों की अपेक्षा सरकारी शिक्षिकाओं में अधिक के व्यावसायिक तनाव पाया गया।
8. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत गैर–सरकारी शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। जबकि गैर–सरकारी शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के

व्यावसायिक तनाव के मध्यमानों के आधार पर गैर–सरकारी शिक्षकों की अपेक्षा गैर–सरकारी शिक्षिकाओं में अधिक के व्यावसायिक तनाव पाया गया।

9. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत सरकारी शिक्षकों एवं गैर–सरकारी शिक्षकों के व्यावसायिक तनाव में सार्थक अन्तर पाया गया। जबकि सरकारी शिक्षक एवं गैर–सरकारी शिक्षकों के व्यावसायिक तनाव के मध्यमानों के आधार पर गैर–सरकारी शिक्षकों की तुलना में सरकारी शिक्षकों कम व्यावसायिक तनाव पाया गया।
10. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत सरकारी शिक्षिकाओं एवं गैर–सरकारी शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव में सार्थक अन्तर पाया गया। जबकि सरकारी शिक्षिकाओं एवं गैर–सरकारी शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव के मध्यमानों की तुलना के आधार पर गैर–सरकारी शिक्षिकाओं की अपेक्षा सरकारी शिक्षिकाओं में कम व्यावसायिक तनाव पाया गया।

अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ

शैक्षिक प्रक्रिया में शिक्षक एक ध्रुव की तरह है तथा समाज की एक महत्वपूर्ण इकाई है। शिक्षकों के द्वारा किये जाने वाले कार्य समाज को महत्वपूर्ण दिशा प्रदान करते हैं। वर्तमान की जटिलता, घटते रोजगार के अवसर, सामाजिक असहयोग, पारिवारिक उलझनें आदि ने शिक्षकों में मानसिक तनाव की स्थिति उत्पन्न कर दी है। जिसका नकारात्मक प्रभाव उनके कार्य संतुष्टि पर पड़ा है। प्रस्तुत शोध कार्य माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत सरकारी तथा गैर–सरकारी शिक्षक तथा शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव एवं कार्य संतुष्टि के अन्तर कोसमझने में सहायता करेगा। जिससे सरकारी तथा गैर–सरकारी शिक्षक–शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव को कम करने के प्रयास किए जा सकें एवं उनको अधिकतम कार्य संतुष्टि प्रदान की जा सके।

संदर्भ

1. Best, John W, James Kahn V, Arvind Jha K. Research in Education: New Delhi, Pearson Publisher, 2016, 504.
2. Singh, Yogesh Kumar. Fundamental of Research methodology and statistics: New Delhi, New Age International (P) Limited Publishers, 311.
3. Cresewell, John W. Educational Research: Planning, Conducting, and Evaluating Quantitative and Qualitative Research (4th Edition): New Delhi, Pearson Publisher, 2011, 643.
4. Walliman, Nicholas. Research Methods the Basics: Londan, Routledge Taylor & Francis group, 2011, 183.
5. Kumar, Dinesh. Methodology of Educational Research and Statistics: New Delhi, Laxmi Publications (P) Ltd, 2011, 367.
6. Lal, Raman Bihari, Sunita Palod. Philosophical and Sociological Perspectives of Education: Meerut, R. Lall Book Depot, 2016, 600.
7. https://amity.edu/UserFiles/admaa/76ac7Paper%204.pdf
8. https://mpra.ub.uni-muenchen.de/50860/1/MPRA_paper_50860.pdf
9. https://www.researchgate.net/publication/341656571_Employees'_Job_Satisfaction_and_their_Work_Performance_as_Elements_Influencing_Work_Safety
10. https://garph.co.uk/IJARMSS/Jan2017/1.pdf
11. https://www.navodayatimes.in/news/khabre/coronavirus-crisis-immediate-impact-on-employment-inequality-will-increase-in-long-term-rkdsnt/149197/
12. https://ndtv.in/india-news/coronavirus-havoc-66-percent-of-peoples-employment-affected-17-percent-unemployed-2360498
13. https://www.newsnationtv.com/india/news/coronavirus-covid-19-shock-to-the-government-on-the-employment-front-unemployment-rate-rose-to-145-percent-in-may-2021-187620.html
14. https://hindi.news18.com/news/business/coronavirus-pandemic-hit-employment-of-7-million-people-lost-jobs-in-april-2021-national-unemployment-rate-increased-achs-3577113.html
15. https://hindi.oneindia.com/news/india/the-major-impact-of-corona-virus-on-employment-unemployment-rate-has-crossed-23-percent-in-india-555434.html
16. https://economictimes.indiatimes.com/hindi/news/86-fear-job-losses-as-coronavirus-scare-mounts-survey/articleshow/75566773.cms?from=mdr
17. https://www.dw.com/hi/delhi-govts-job-portal-saw-spike-in-registrations/a-58134669
18. https://www.ideasforindia.in/topics/poverty-inequality/how-many-jobs-were-lost-in-urban-india-during-lockdown-hindi.html
19. https://www.orfonline.org/hindi/research/destructive-second-wave-the-impact-on-women-and-the-rural-economy-in-india/
20. https://www.amarujala.com/haryana/sonipat/labourers-returning-their-homes-due-to-fear-of-lockdown-from-sonipat